हिल्डे और ईलाई

बच्चे नात्ज़ी नरसंहार के



लेखनः डेविड ए. एडलर

चित्रः कैरन रित्ज़

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

हिल्डे रोज़नत्स्वाइग का जन्म 1923 में जर्मनी में मेन नदी के किनारे बसे फ्रांकफुर्ट शहर में हुआ था। उसे बचपन में अपनी तिपहिया साइकल चलाना और गुड़ियों से खेलना पसन्द था। ईलाई लैक्स चैकोस्लोवाकिया के ज़ारिक गाँव में पैदा हुआ था। वह स्कूल में खूब पढ़ाई करता था और उसे जानवरों से प्यार था। दोनों ही बच्चे जर्मनी में नात्ज़ी शासन के आरंभिक सालों में पैदा हुए थे। वे उन 15 लाख यहूदी बच्चों में शामिल थे जो नरसंहार के शिकार हुए। यह उनकी कहानी है।

हिल्डे और ईलाई

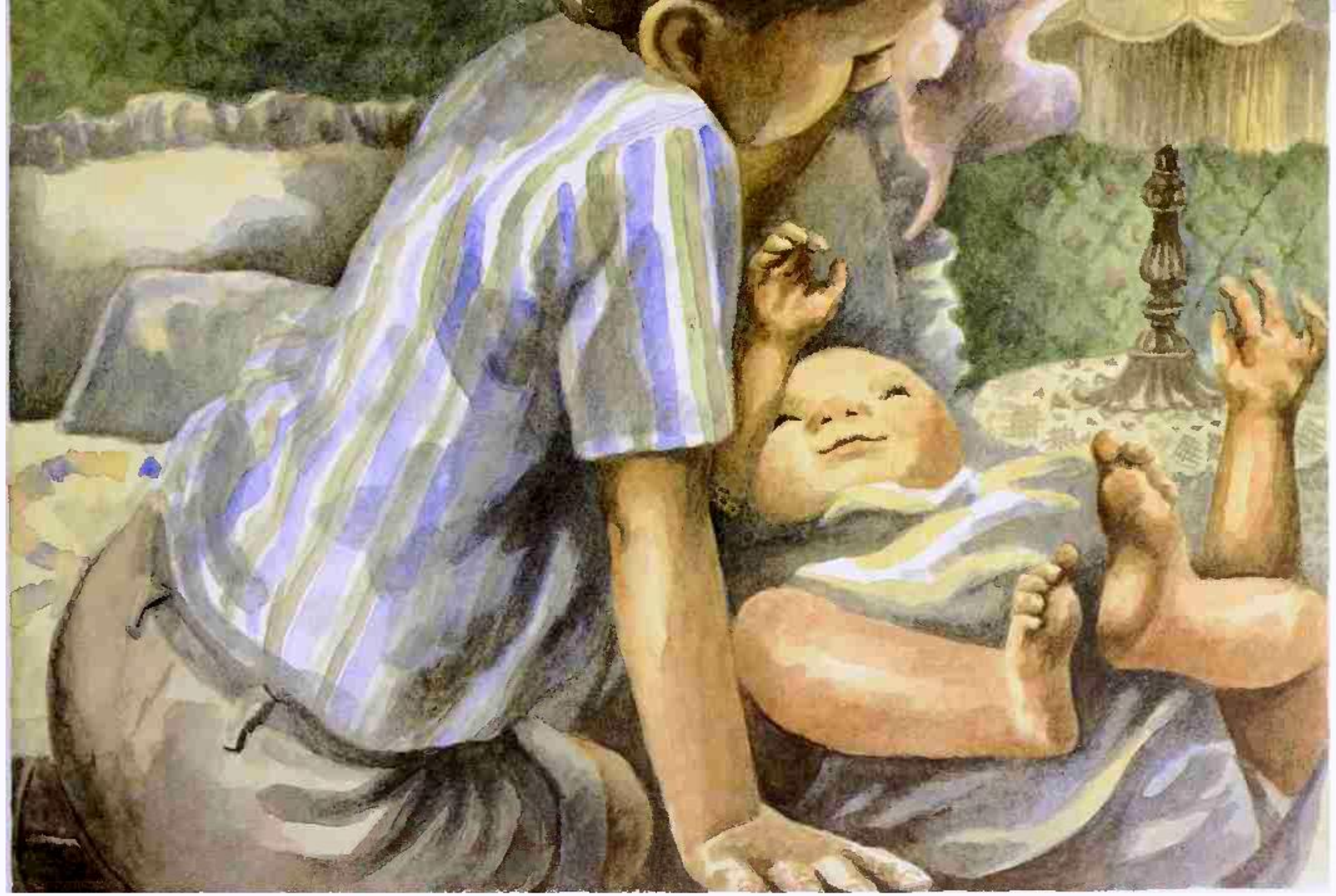
बच्चे नात्ज़ी नरसंहार के

लेखनः डेविड ए. एडलर

चित्रः कैरन रित्ज़

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





नरसंहार के दौरान मारे गए लाखों लोगों में दो यहूदी बच्चे हिल्डे रोज़नत्स्वाइग और ईलाई लैक्स भी थे।

हिल्डे रोज़नत्स्वाइग हल्के भूरे रंग के बालों और सुरमई आँखों वाली सुन्दर सी बच्ची थी। उसका जन्म 14 जुलाई 1923 के दिन जर्मनी में मेन नदी के किनारे बसे शहर फ्रांकफुर्ट में हुआ था। हिल्डे और उसका बड़ा भाई जूलियस अपने माता-पिता - बर्टा, व अब्राहम रोज़नत्स्वाइग के साथ 27, फ्रीडबर्गरलाण्ड स्ट्रासे वाली इमारत में एक अपार्टमेंट में रहते थे। उनका अपार्टमेंट एक साइकल की दुकान और क़िताबों की दुकान के ऊपर था।

1923 में जब हिल्डे का जन्म हुआ था, जर्मनी में एक मुश्किल दौर चल रहा था। चीज़ों की कीमतें इस तेज़ी से बढ़ रही थीं कि कोई भी जर्मन मार्क को बचा कर नहीं रखना चाहता था। तमाम लोगों की नौकरियाँ छिन गई थीं। नवम्बर 1923 में एडॉल्फ हिटलर नाम के एक राजनीतिज्ञ ने, जिसका लोग तब नाम तक नहीं पहचानते थे, एक विद्रोह का नेतृत्व किया, जो असफल रहा। हिटलर और उसके साथियों को गिरफ्तर कर जेल में डाल दिया गया। कीमतों और राजनीतिज्ञों को लेकर चिन्ता करने के लिए हिल्डा बहुत छोटी थी। उसे तो अपने घर के सामने वाले बाग में तिपहिया साइकल चलाने का शौक था।





जब हिल्डे इतनी बड़ी हो गई कि जूलियस के साथ छोटे-मोटे काम करने जा सके, वे लौटते समय अक्सर काउफहाउस (डिपार्टमेंटल स्टोर) हान्सा के सामने रुकते। हिल्डे को उसकी प्रदर्शन खिड़की में सजे खिलौने, खास तौर से गुड़ियाएं और गुड़ियाघर देखने में बड़ा मज़ा आता था। वह अक्सर सोचती कि उसे अपनी सालगिरह या हनूका (यहूदियों का सबसे बड़ा त्यौहार) पर क्या मिलेगा।



कभी हिल्डे के दोस्त मिलने आते, तो वे बाहर रस्सी कूदते या पहल-दूज खेलते। घर में वे खाने की मेज़ पर पिन्ग-पॉन्ग खेलते थे।

1932 तक हिल्डे को लगता था कि स्कूल जाने के, पार्क में घूमने के, और दोस्तों के मिलने आने के मस्ती भरे दिन हमेशा ही जारी रहेंगे।

पर तब उसके पिता को अपनी दुकान बन्द करनी पड़ी। जर्मनी में लाखों लोगों के रोज़गार छिन गए थे। फ्रांकफुर्ट में लोगों के पास नई चादरें, गिलाफ़ और बिछौने ख़रीदने के पैसे ही नहीं थे। अब्राहम रोज़नत्स्वाइग को जब भी कोई काम मिलता वे करते। तंगी के चलते उन्होंने हिल्डे का कमरा मिस्टर और मिसेज़ शूल्हर को किराए पर दे दिया। हिल्डे अब अपने माता-पिता के कमरे में सोने लगी।

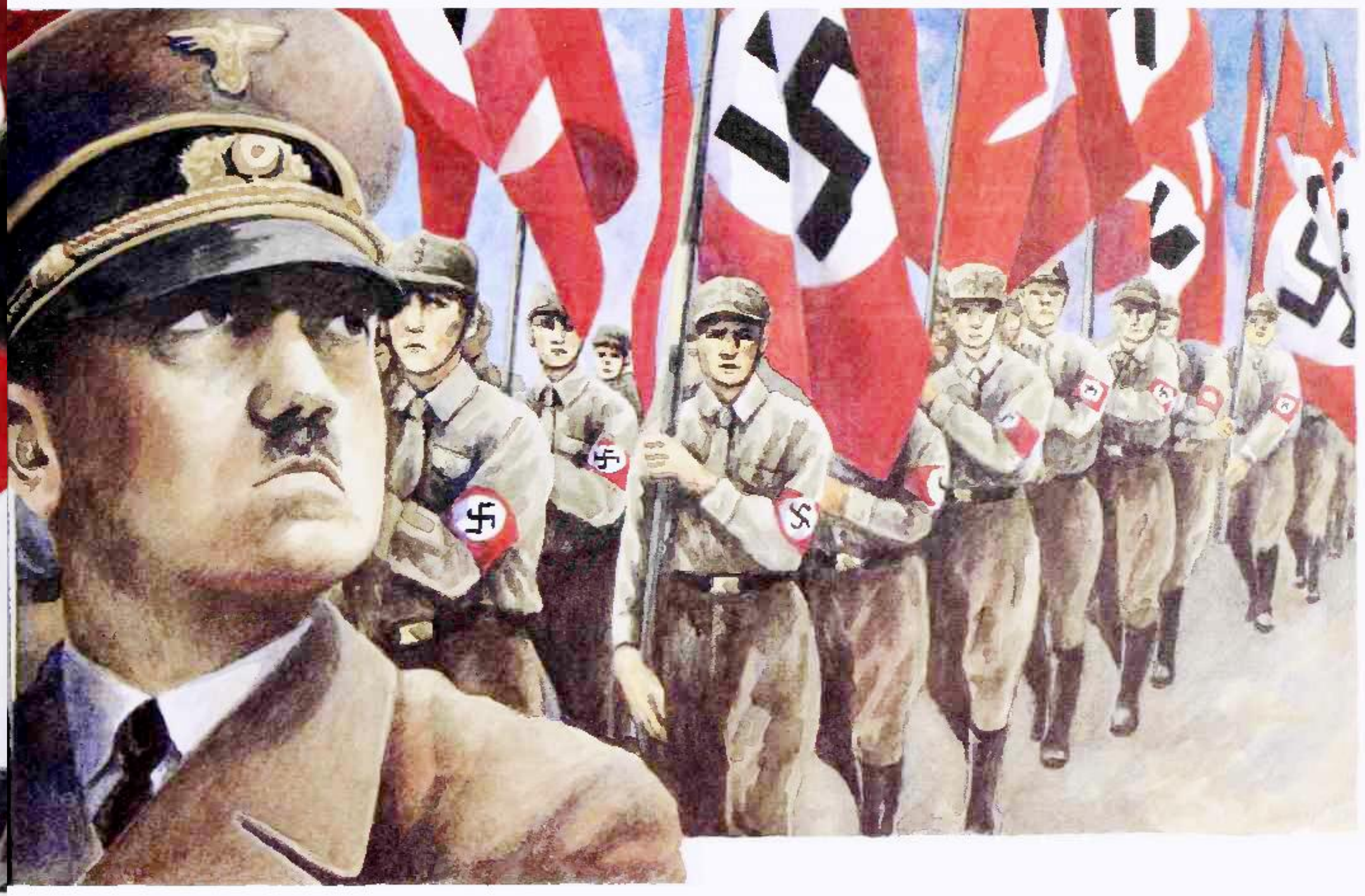
शूल्हर दम्पति जर्मन प्रोटैस्टेंट थे। मिसेज़ शूल्हर बाल काटने-संवारने का काम करती थीं। वे खास दोस्ताना नहीं थीं। पर उनके पति बड़े अच्छे थे और गृहकार्य करने में हिल्डे और ज़ूलियस की मदद करते थे।





1932 तक एडॉल्फ हिटलर को, जिसे 1923 में गिरफ्तार किया गया था, सब जानने लगे थे। उसे 1924 में सिर्फ नौ महीने के बाद ही रिहा कर दिया गया था। वह तब से ही नुक्कड़ों और बीयर हॉलों में भाषण देता। वह बताता कि जर्मनी में क्या-क्या गलत है। चूंकी वह दौर सचमें मुश्किलों से भरा था, इसलिए लोग उसकी बात सुनने लगे थे।

हिटलर ने तमाम वादे किए - अधिक नौकरियाँ, अधिक मुनाफ़ा, ताकतवर सेना, और अधिक 'लेबन्सराउम' (रहने की जगह)। हिटलर ने बार-बार दोहराया कि जर्मनी की तमाम समस्याओं की जड़ हैं यहूदी लोग।



1932 के चुनावों में हिटलर और उसकी नात्ज़ी पार्टी को अन्य राजनीतिक दलों से ज़्यादा वोट मिले। 30 जनवरी 1933 को हिटलर को जर्मनी का 'चांसलर' (प्रधान मंत्री) घोषित किया गया।

नात्ज़ी पार्टी के वर्दीधारी सदस्यों का एक हिस्सा भूरी कमीज़ें पहनता था, वे एसए कहलाते थे। और काली कमीज़ पहनने वाले एसएस। हिटलर को चांसलर घोषित करने का जश्न नात्ज़ियों ने यहूदियों पर हमला कर मनाया। मार्च में यहूदियों को बन्दी बनाने के लिए पहला कॉन्सन्ट्रैशन कैम्प (यातना शिविर) दाखाउ, जर्मनी में तैयार हुआ। यहाँ उन लोगों को भेजा गया जिन्हें नात्ज़ी अपना दुश्मन मानते थे।

कभी-कभी फ्रीडबर्गरलाण्ड स्ट्रासे में भी नात्ज़ी अपना वाहन रोकते और लाउडस्पीकर पर हिटलर के भाषण प्रसारित करते। हिल्डे उन्हें नहीं सुनती। वह हिटलर को चीख-चिल्ला कर यहूदियों के प्रति घृणा जताते सुनना नहीं चाहती थी।

मार्च से ही हिल्डे को कई दुकानों के सामने 'यहूदियों से मत खरीदें' के पोस्टर चिपके नज़र आने लगे। 1 अप्रेल से यहूदियों की दूकानों के सामने एसए तैनात कर दिए गए, ताकि कोई अन्दर घुस ही न सके। उस दिन से हिल्डे बाज़ार से दूर रही।

हिल्डे को लगा कि 'यहूदियों की ज़रूरत नहीं!' का नारा हर जगह चस्पां किया जा रहा है। उसे लगने लगा कि वह अपने ही देश में बेगानी बन चुकी है।

10 मई 1933 के दिन यहूदियों की लिखी क़िताबें सड़कों पर फेंकी और जलाई गईं। कुछ यहूदी जर्मनी छोड़ चल गए। पर कई परिवारों ने, मय रोज़नत्स्वाइग परिवार ने इन्तज़ार किया। उन्हें उम्मीद थी कि घृणा की यह लहर जल्द ही थम जाएगी।

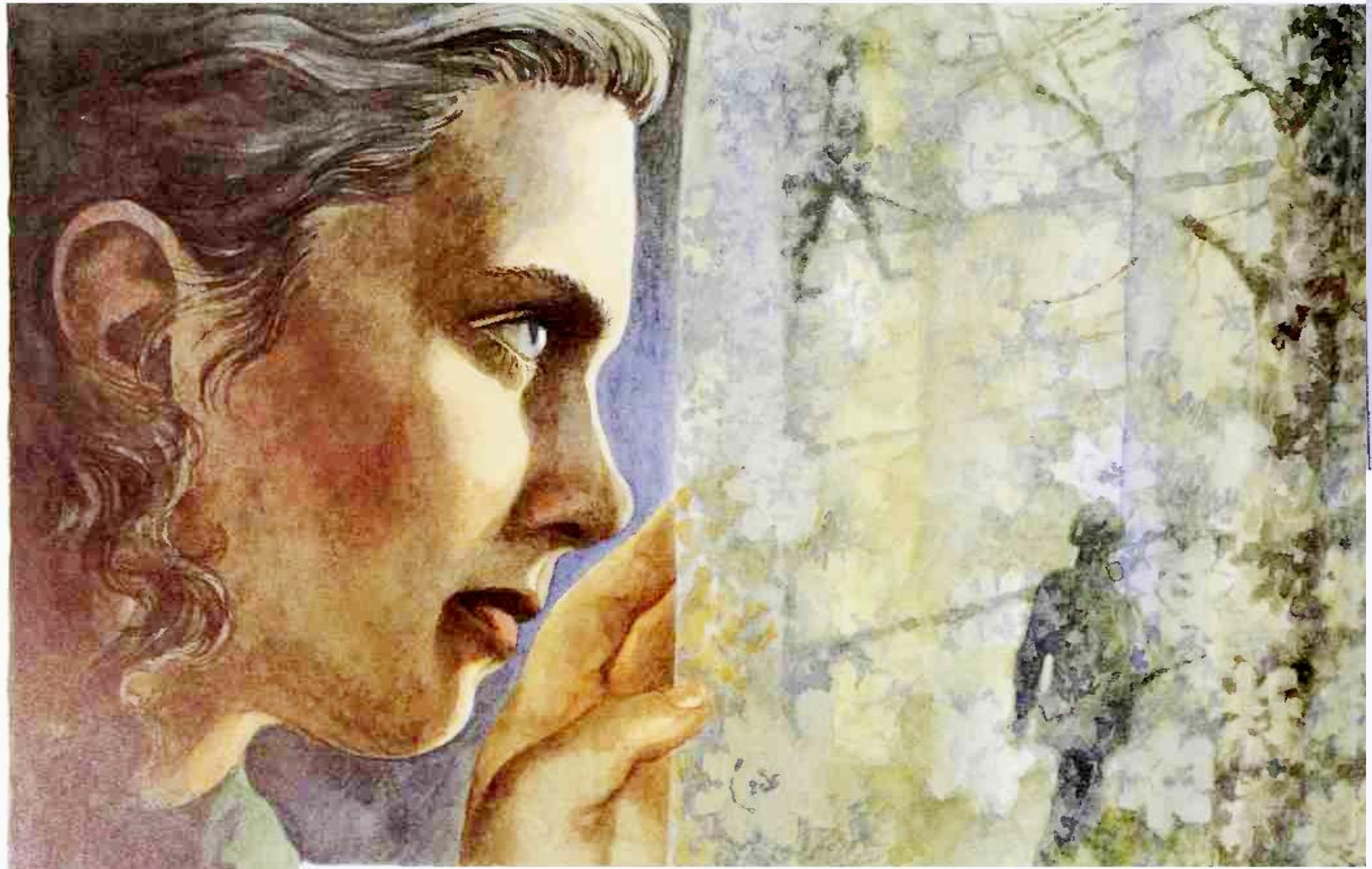




पर 1935 में नए कानून बनाए और लागू किए गए, जिनमें यह घोषणा की गई कि यहूदी जर्मनी के नागरिक नहीं हैं। जर्मनी का झंडा फहराने की उन्हें अनुमति नहीं है। साथ ही कई यहूदियों को उनकी सम्पत्ति और धंधे बेचने पर मजबूर किया गया।

बर्टा रोज़नत्स्वाइग ने अपने बच्चों जूलियस और हिल्डे से कहा कि वे सावधान रहें और किसी भी ग़ैर-यहूदी को नाराज़ नहीं करें। बच्चों को वे अब रात को घर से नहीं निकलने देती थीं।

1938 में शूल्हर दम्पति हिल्डे के कमरे से निकल कहीं और रहने चले गए। मिस्टर शूल्हर को नात्ज़ियों की नौकरी मिल गई थी। ज़ाहिर था कि वे अब किसी यहूदी के घर नहीं रह सकते थे।





जूलियस रोज़नत्स्वाइग को पता था कि उसे जर्मनी से निकलना होगा। उसने संयुक्त राज्य अमरीका के वीज़ा का आवेदन किया। कुछ महीनों बाद हिल्डे और उसकी माँ बर्टा ने भी आवेदन पत्र भरा। मिस्टर रोज़नत्स्वाइग ने आवेदन नहीं किया। वे मधुमेह के रोगी थे और सफ़र नहीं कर सकते थे।

जूलियस का नाम एक लम्बी प्रतीक्षा सूची के अंत में जोड़ा गया। कुछ माह बाद जब हिल्डे और उनकी माँ ने आवेदन किया तब तक वह सूची और भी लम्बी हो चुकी थी।

13 मार्च 1938 को जर्मन सेना ने ऑस्ट्रिया पर हमला बोला, जो एक जर्मन भाषी पड़ोसी राज्य था। हिटलर ने ऑस्ट्रिया को जर्मनी का हिस्सा घोषित कर दिया।

आठ महीनों के बाद 9 नवम्बर 1938 को हिल्डे एक दहशत भरी रात की गवाह बनी। उनके अपार्टमेंट के बाहर चीख-पुकार मची थी। शहर में चारों ओर आग लगी थी। एसए, एसएस और अन्य लोग यहूदियों की दुकानों और घरों को लूट रहे थे। सिनेगागों (यहूदी प्रार्थना स्थलों) को जलाया जा रहा था।

बोर्न प्लात्जे सिनेगॉग जहाँ हिल्डे और उसका परिवार प्रार्थना करता था, तबाह कर दिया गया। काउफहाउस हान्सा की प्रदर्शनी खिड़की को, जिसमें गुड़ियाएं, गुड़ियाघर सजे होते थे, तोड़ा डाला गया था। उस दुकान को लूट लिया गया था। हिल्डे इन दोनों ही जगहों पर फिर कभी नहीं गई।

दो वर्दीधारी नात्ज़ी रोज़नत्स्वाइग परिवार के अपार्टमेंट घर में घुसे। वे एक के बाद दूसरे अपार्टमेंट में गए और यहूदी पुरुषों और लड़कों को गिरफ्तार किया और उन्हें यातना शिविरों में भेज दिया। मिस्टर रोज़नत्स्वाइग इसलिए बच गए क्यूँकि वे बेहद बीमार थे, सैनिकों ने उन्हें नहीं पकड़ा। और जूलियस उनके पहुँचने के पहले ही पिछले दरवाज़े से फ़रार हो गया।





अगली सुबह जर्मनी और ऑस्ट्रिया की सड़कें राख और काँच के टुकड़ों से अटी पड़ी थीं। बाद में 9 नवम्बर की यह रात 'क्रिस्टलनाख़्त' (टूटे काँच की रात) कहलाई।

जूलियस को इंग्लैण्ड का अस्थाई वीज़ा मिल गया। वह वहाँ पहुँच अमरीका जाने के मौके का इन्तज़ार करता रहा। 13 जून 1939 के दिन हिल्डे अपने भाई को विदा करने रेल्वे स्टेशन गई।

छह दिन बाद, 19 जून को हिल्डे के पिता की मौत हो गई। फ्रीडबर्गरलाण्ड स्ट्रासे वाले अपार्टमेंट में हिल्डे और उसकी माँ ही रह गए।





ईलाई लैक्स कभी हिल्डे रोज़नत्स्वाइग से नहीं मिला। मिलता भी कैसे दोनों एक-दूसरे से सैंकड़ों मील दूर रहते थे। पर उसे भी यहूदियों के प्रति नात्ज़ियों की घृणा झेलनी पड़ी।

ईलाई लैक्स अपने परिवार के साथ, उस देश में रहता था जो तब चैकोस्लोवाकिया कहलाता था। उसका परिवार वहाँ के कार्पाथियन पर्वतों में रहता था। ईलाई छह बच्चों में सबसे छोटा था। उसका जन्म 1932 में हुआ था।



ईलाई के पास खिलौने नहीं थे, पर वह एक खुशमिजाज़ बच्चा था। वह अपने घर के सामने वाले पेड़ से गिरे अखरोटों से खेलता, घर में रखे बटनों और बीजों से खेलता। ईलाई को जानवरों से प्यार था। उसके परिवार के पास गायें, मुर्गियाँ और कलहंस (गीस) थे। ईलाई के भाई ने एक मुर्गी पाल रखी थी। ईलाई परिवार के पशुओं की देखभाल में मदद करता था। पास की नदी किनारे उसे मेंढक मिलते, वह उन्हें भी घर ला उनकी देखभाल करता।

ईलाई के पिता रबाई (यहूदियों के पादरी) थे। वे अपने बच्चों से कहते कि स्कूल जाना और सीखना बेहद ज़रूरी है।

जब ईलाई तीन वर्ष का हुआ उसने एक धार्मिक स्कूल में जाना शुरू किया। जब वह छह साल का हुआ वह एक दूसरे स्कूल भी जाने लगा ताकि वह लिखना-पढ़ना भी सीख सके। वहाँ वह गणित, इतिहास, विज्ञान भी पढ़ता था। वह हर सुबह पाँच बजे से शाम के छह बजे तक, यानी दिन के तेरह घंटे एक या दूसरे स्कूल में बिताता था। ईलाई अच्छा छात्र था।

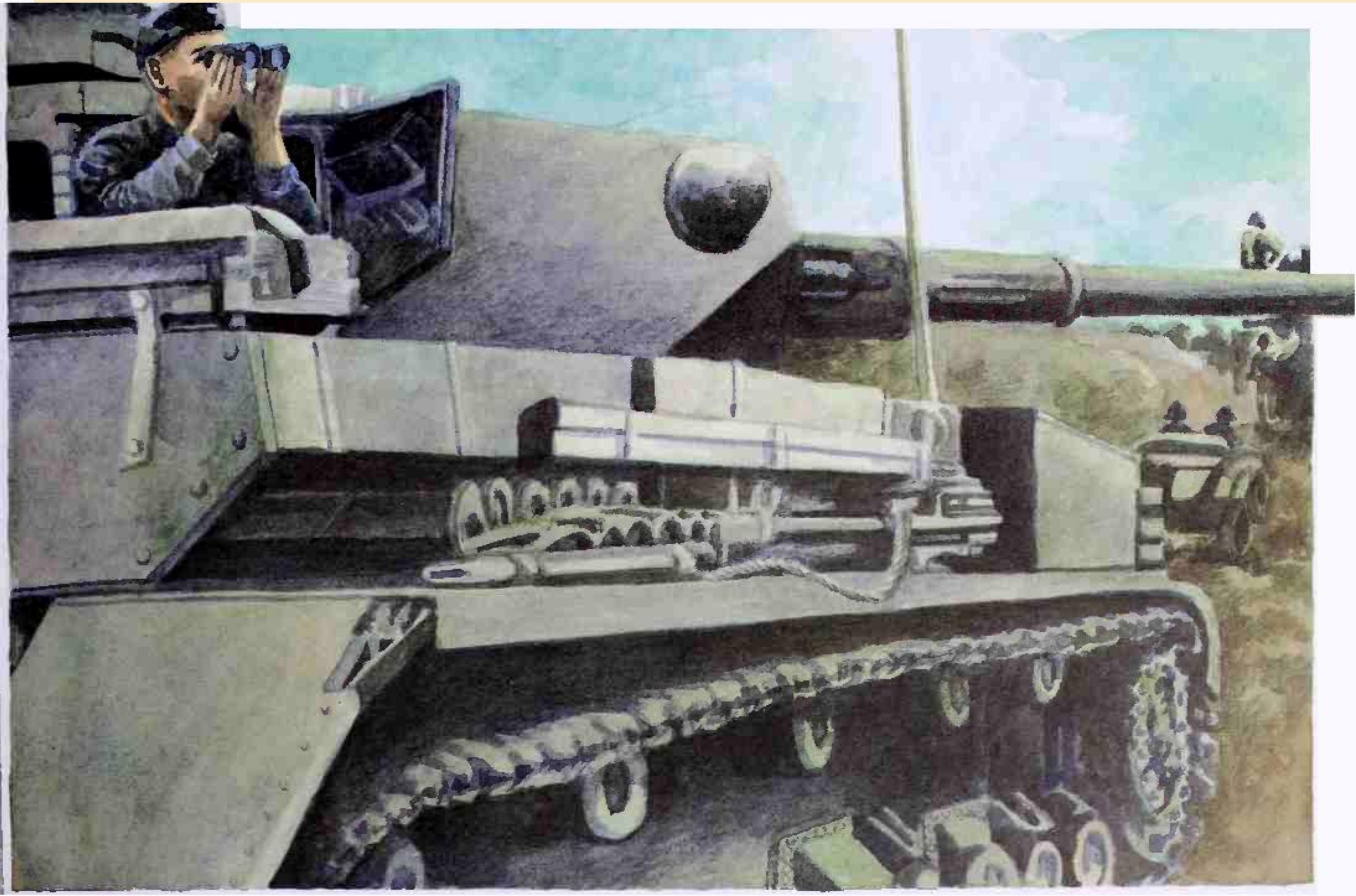


1935 में ईलाई की माँ की मौत हो गई। उसके अगले साल उसकी बड़ी बहन सीलिया, अमरीका चली गई।

सीलिया ने नार्मेण्डी नामक मुसाफिरों वाले जहाज़ से एक चित्र पोस्टकार्ड भेजा था। ईलाई अक्सर उसे देखा करता था। उसके पिता ने उसे और उसके भाई-बहनों से कहा था कि वे सब अमरीका चले जाएंगे। ईलाई एक साइकल का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा था। उसे भरोसा था कि सीलिया उसे एक साइकल ख़रीद देगी।

सीलिया ने अपने परिवार को अमरीका बुलाने के लिए के लिए आवेदन भरे। अब उन्हें सिर्फ अप्रवास अधिकारियों की अनुमति की ही ज़रूरत थी।

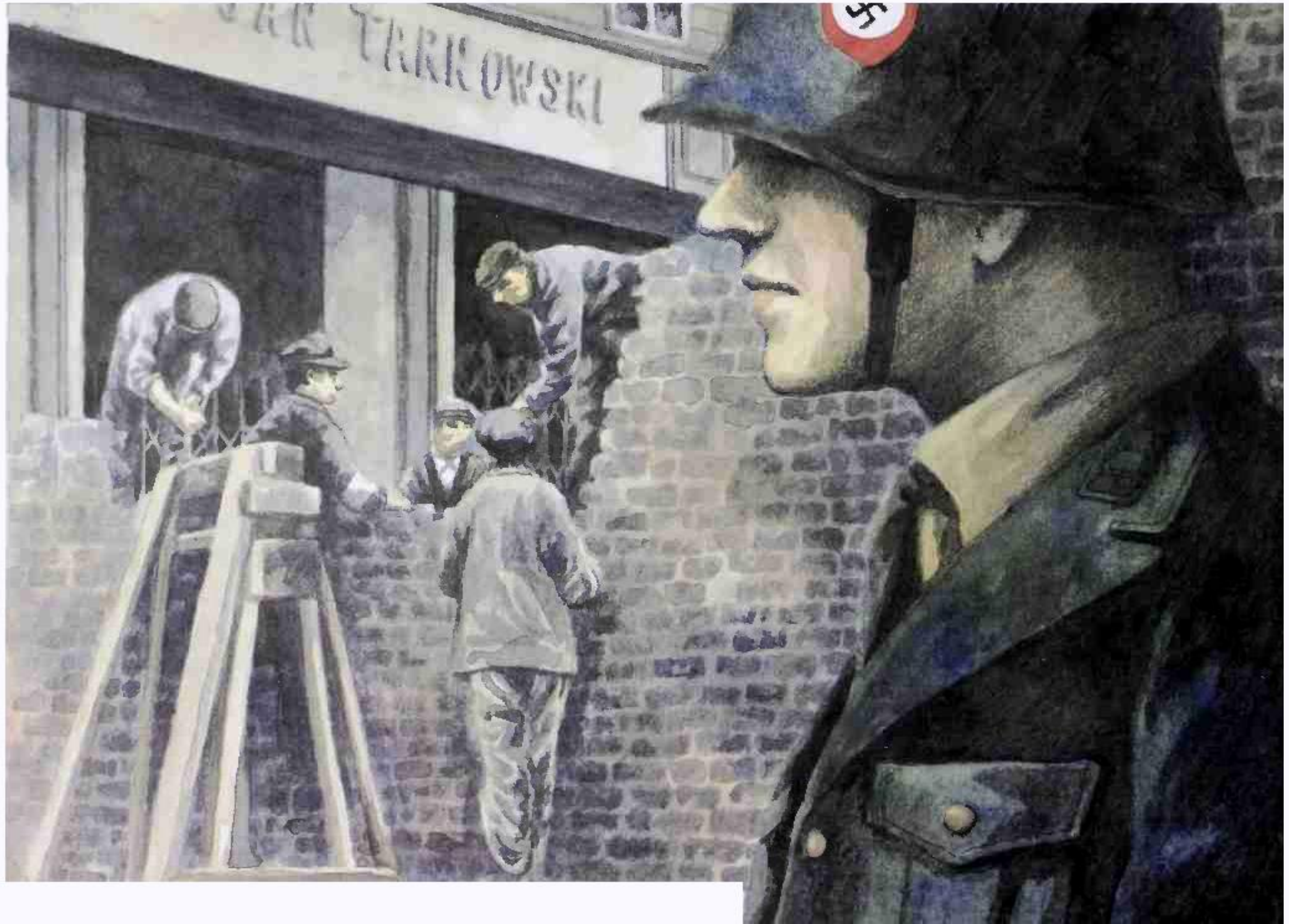




सितम्बर 1938 में जर्मनी ने सूडाटनलैण्ड पर, जो चैकोस्लोवाकिया का जर्मन भाषी इलाका था, कब्ज़ा कर लिया। छह महीने बाद मार्च 1939 में जर्मन सेना समूचे चैकोस्लोवाकिया पर काबिज़ हो गई। ईलाई और उसका परिवार अब जर्मनी के शासन के अधीन था। 1 सितम्बर 1939 में जर्मन सेना ने पोलैण्ड पर हमला किया। इसके साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया।

पहले तो नात्ज़ियों की योजना यहूदियों को जर्मनी से भगाने की थी। पर तब उन्होंने एक 'अंतिम समाधान' तलाश लिया। उनकी योजना अब यूरोप के सभी यहूदियों को मौत के घाट उतार देने की थी!

जर्मन सेना यूरोप को पार करते हुए पोलैण्ड, नार्वे, हॉलैण्ड, बैल्जियम, फ्रांस, ग्रीस, युगोस्लाविया और सोवियत युनियन तक पहुँची। यूरोप में जर्मनी का साथ देने वाले देश थे रोमानिया, हंगरी, इटली और बुल्गारिया। जिन देशों पर जर्मनी का शासन बहाल हुआ उन सभी में यहूदियों को जबरन गाँवों, कस्बों और बड़े शहरों से हटा कर उन्हें शहर के दीवारों से घिरे एक छोटे से हिस्से में ठूंस दिया, जिन्हे 'घेट्टो' कहा जाता था।





जुलाई 1941 की एक रात ईलाई के चचेरे भाइयों को धर-पकड़ कर जबरन ले जाया गया। ईलाई ने उनकी चीखें सुनीं। ईलाई इस कदर दहल गया कि वह सो नहीं सका।

नात्ज़ी शासन के अधीन यहूदी अपना ही देश छोड़ भागने को बेताब हो गए। पर उनमें से अधिकतर के पास कहीं जाने की जगह ही नहीं बची थी। जब जूलियस रोज़नत्स्वाइग इंग्लैण्ड में था उसने हिल्डे और अपनी माँ के लिए वीज़ा पाने की कोशिशें कीं। पर वह असफल रहा।

सितम्बर 1941 की शुरुआत में हिल्डे को अपने कपड़ों पर पीला सितारा पहनना शुरू करना पड़ा जिसके बीचोंबीच 'यूडे' (यहूदी) लिखा था। जर्मनी के सभी यहूदियों को यह सितारा पहनने का आदेश दिया गया।





नवम्बर 1941 में एसए सैनिक 27 फ्रीडबर्गरलाण्ड स्ट्रासे में आए। उन्होंने हिल्डे और उसकी माँ को दूसरे यहूदियों के साथ एक मालगाड़ी में ठूंसा। उनका डब्बा बाहर से बन्द कर दिया गया। कह गया कि उन सबको लाटविया के रीगा में बने एक घेट्टो में ले जाया जा रहा है। पर वह मालगाड़ी रास्ते में रुकी। एसएस सैनिकों ने मालगाड़ी में ज़हरीली गैस भर दी। अन्दर जितने भी लोग थे वे मारे गए।

पोलैण्ड का एक यहूदी नात्ज़ियों से बचने के लिए ज़ारिख आया। उसने ईलाई के परिवार को बताया कि वहाँ क्या हो रहा था।

ईलाई के पिता ने उसकी बातें सुनने के बाद सोचा कि वह अपने बच्चों के साथ भाग जाए। पर जाने की कोई जगह बची ही नहीं थी। नात्ज़ी अब हर जगह थे। पोलैण्ड के यहूदी ज़ारिख में छिप रहे थे। सो, उन्होंने सोचा कि वे वहीं महफ़ूज़ हैं और उन्हें बस युद्ध खत्म होने का इन्तज़ार करना है।





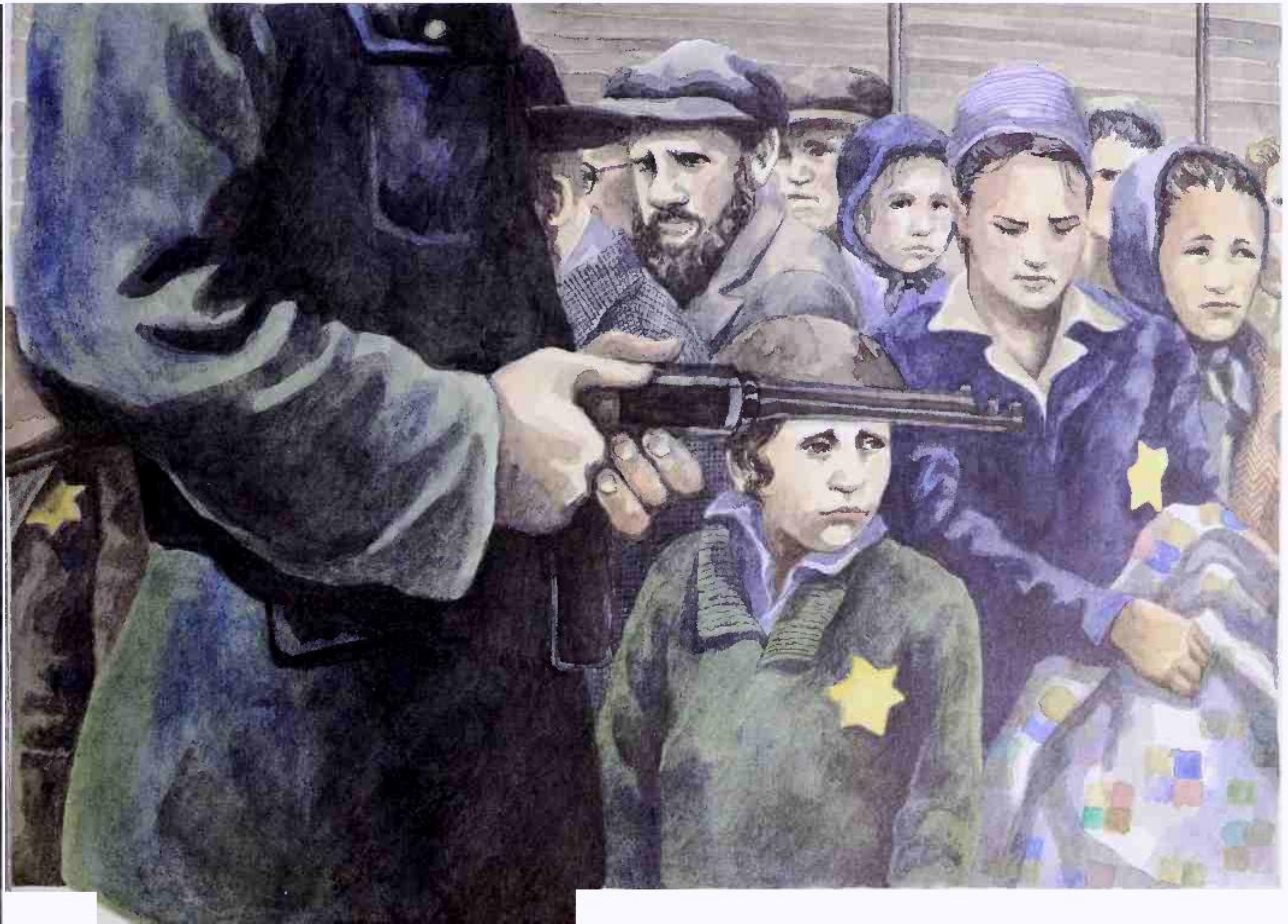
अप्रेल 1944 में बन्दूकधारी पुलिस ने ईलाई और उसके परिवार को एक घोड़ागाड़ी में बिठाया और उन्हें दो मील दूर इरशावा घेट्टो में ले गए। वहाँ एक कमरे में चार परिवारों के बीस लोगों को रखा गया। मई में ईलाई और उसके परिवार को लाठियों से भगा कर एक मालगाड़ी में चढ़ाया गया। एक बन्द डब्बे में दो घंटों के सफ़र के बाद उन्हें मुन्काछ घेट्टो में ले जाया गया।

ईलाई डर रहा था पर उसके मन में अब भी उम्मीद थी। वह अपनी बहनों से अमरीका जाने की बात करता रहा।

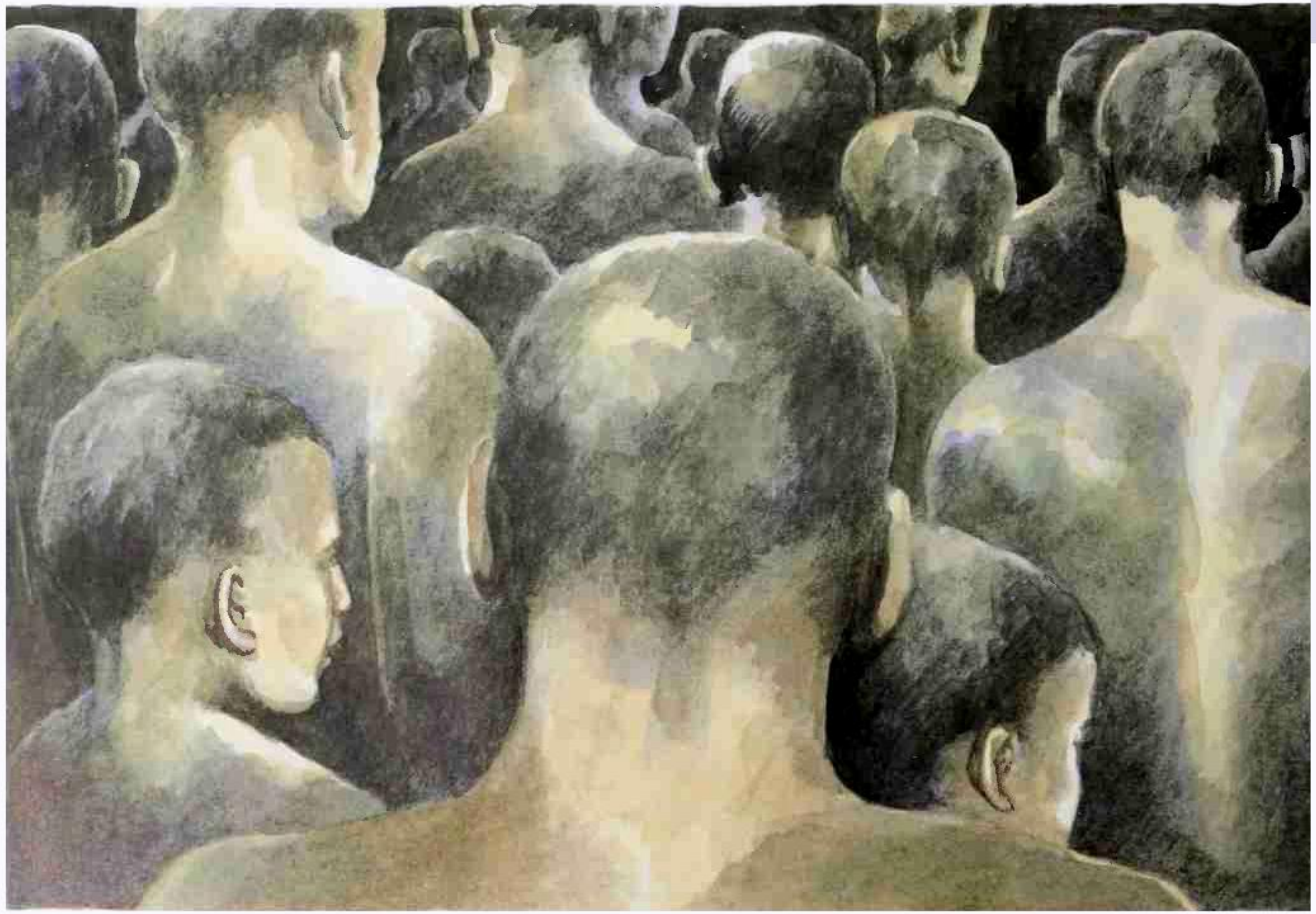
मुन्काछ में तीन सप्ताह बिताने के बाद ईलाई और उसके परिवार को उनके कमरे से घसीट कर निकाला गया। लाठियों से उन्हें खदेड़ते नात्ज़ी "श्नैल, श्नैल!" (जल्दी, जल्दी!) कह चीख रहे थे। ईलाई की बहनों ने मालगाड़ी की ओर भागते हुए उसका हाथ पकड़ रखा था। मालगाड़ी में जानवरों को ढ़ोने वाले एक डब्बे में सौ से अधिक लोग भर दिए गए। उनमें से कई बीमार थे, तो कई रो रहे थे।



पूरे तीन दिनों बाद मालगाड़ी रुकी। वे पोलैण्ड में बने आउश्वाइत्ज़ यातना शिविर में थे। बन्दूकधारी नात्ज़ियों ने डब्बों के दरवाज़े खोले। ईलाई अपने पिता का हाथ थामे था। उतरने का बाद उन्हें प्लैटफॉर्म पर एक कतार में खड़ा किया गया। एक नात्ज़ी अफसर कुछ लोगों को एक तरफ और कुछ को दूसरी ओर बढ़ने का इशारा कर रहा था। ईलाई और उसके भाई और पिता को बाईं ओर भेजा गया। जबकि उसकी बहनों को दाहिनी ओर।



नात्ज़ियों ने ईलाई, उसके भाई, पिता और दूसरे पुरुषों से कहा कि उन्हें नहाने की ज़रूरत है। उनसे अपने कपड़े उतारने, उन्हें तह करने, और जिस जगह वे कपड़े रखें उस जगह को याद रखने को कहा गया। तब उन्हें एक बड़े नहानघर में ले जाया गया। उसके दरवाज़े बन्द कर दिए गए और छत में बने एक छेद से ज़हरीली गैस की गोलियाँ टपकाई गईं। ईलाई, उसका भाई, पिता और तमाम दूसरे लोग मारे गए। बाद में उनके शवों को जला दिया गया।





यहूदियों को गोलियों से भूना गया, ज़हरीली गैस से मारा गया, और उन्हें यातना दी गई। 8 मई 1945 तक, जिस दिन यूरोप में युद्ध खत्म हुआ नत्ज़ियों ने तकरीबन 60 लाख यहूदियों की हत्या कर दी, जिनमें 15 लाख बच्चे थे। इन बच्चों में हिल्डे रोज़नत्स्वाइग और ईलाई लैक्स शामिल थे।

लेखक की कलम से

नात्ज़ियों ने केवल यहूदियों पर ही ज़ुल्म नहीं ढाए। उन्होंने रोमानियों, सर्बों, योहावास् विटनैसों, समलैंगिकों, कम्युनिस्टों, वृद्धों, विकलांगों, मनोरोगियों, भिखारियों, और रूसी युद्धबन्दियों की भी हत्याएं कीं। पर इस क़िताब का विषय 'होलोकास्ट' (नरसंहार) है। इसका शाब्दिक अर्थ है आग से भारी विनाश। इसका उपयोग नात्ज़ियों द्वारा यहूदियों की हत्या के लिए किया जाता है।

इस क़िताब में शामिल हिल्डे रोज़नत्स्वाइग और उसके परिवार की सूचनाएं मुझे हिल्डे के भाई जूलियस ने दी। वह 1940 में अमरीका पहुँचा था। उसने 1943 से 1946 तक संयुक्त राज्य अमरीका की सेना में अपनी सेवाएं दीं। पिछले पन्ने में दी गई पंद्रह वर्षीय हिल्डे का फोटो उस एल्बम में था जो जूलियस इंग्लैण्ड जाते वक़्त साथ ले गया था। हिल्डे के 40 से अधिक चचेरे-ममेरे भाई-बहनों में से नरसंहार के बाद केवल 13 बचे रहे थे।

ईलाई और उसके परिवार की सूचनाएं मुझे उसकी बहनों ईव स्लोमोविटस, लिली फ्रीडमैन, और ईलोना टैगर ने दी। उन्हें भी ईलाई, उसके बड़े भाई और पिता के साथ आउश्वाइत्ज़ लाया गया था। वहाँ उन्हें दाहिने जाने को कहा गया था। दाहिनी ओर भेजे गए लोगों को गुलामों की तरह मज़दूरी करने के लिए चुना गया था। 15 अप्रेल 1945 में मुक्त होने के पहले उन्हें पाँच विभिन्न यातना शिविरों में भेजा गया था। ईलाई की बहनों को लगता है कि वे इसलिए बची रह सकीं क्योंकि वे किस्मत से साथ बनी रह सकी थीं। पिछले पन्ने पर ईलाई की जो फोटो है वह तब की है जब वह आठ बरस का था। यह फोटो उनकी बड़ी बहन सीलिया को अमरीका में भेजा गया था। बहनों के पास ईलाई का यह एकमात्र फोटो है। ईलाई के पिता बारह भाई बहनों में एक थे। उनकी माँ नौ सन्तानों में एक थीं। ईलाई के 100 से अधिक चचेरे-ममेरे भाई-बहन थे। नरसंहार के बाद उनमें से केवल 30 बच सके थे।

- डेविड ए. एडलर

डेविड ए. एडलर तथा कैरन रित्ज़ ने *अ पिक्चर बुक ऑफ एन फ्रैंक* के लिए भी सहयोग किया है।

